औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण : संरक्षण एवं संवर्द्धन के विविध उपाय

डॉ0 उमारतन यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र,

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,झाँसी,उ.प्र.

शोध सारांश

मानव अपनी विशिष्ट भौतिक व सामाजिक विशेषताओं के कारण विभिन्न संसाधनों का उपयोग एवं उपभोगकर्ता है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ उसने इन आधारभूत संसाधनो के उत्पादन, रूपान्तरण एवं स्थानान्तरण के सतत्, प्रयास किये हैं। प्रयास के इस क्रम में नवीन संसाधनों का विकास हुआ लेकिन विकास पथ पर चलते–चलते मानव समाज संसाधनों के दोहन में इतना आगे बढ़ गया कि जिसमें परिस्थितिकीय असन्तुलन उत्पन्न हो गया । संसाधनों का निरन्तर दोहन आज मानव की आवश्यकाता ही नहीं, अनिवार्यता भी बन गया है।

Keywords: *औद्योगिक विकास,पर्यावरण प्रदूषण,परिवर्तनशील,बढ़ती जनसंख्या,संरक्षण*

भारत एक भाग्यशाली राष्ट्र है,जहाँ प्रकृति द्वारा प्रदत्त प्रचुर साधन इसे निशुल्क प्रयोग के लिये प्रतीक्षारत हैं, किन्तु इन साधनों का मानव कल्याण के लिये अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जाए? यह प्रश्न भारत में औद्योगीकरण के लिये एक चुनौती बनकर उभरकर सामने आया है।

औद्योगीकरण आधुनिक युग की एक अनिवार्य माँग और जरूरत है। इसके बिना कोई भी राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका का भली प्रकार निर्वाह नहीं कर सकता।विश्व के लगभग सभी विकसित राष्ट्र औद्योगीकरण के बल पर ही, प्रचुरता एवं सम्पन्नता के सर्वोच्च स्तर तक पहुँचने में सफल हुए है। अतः यदि यह कहा जाए की औद्योगिक विकास सम्पन्नता की प्रतीक है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यही कारण है कि विश्व के अनेक राष्ट्र औद्योगीकरण की इस दौड़ में शामिल हैं। कई राष्ट्र ऐसे हैं जो प्राकृतिक साधनों से समृद्ध हैं, यदि कोई समस्या है तो इस प्रकार के साधनों के समुचित विदोहन की, जिसमें सम्पन्नता में विपन्नता का जीवन जीने के लिये विवश हैं।

औद्योगीकरण जहाँ एक ओर किसी भी देश की आर्थिक प्रगति का द्योतक है, वही दूसरी ओर कई विकास शील देश औद्योगीकरण से उत्पन्न विभिन्न प्रकार की पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं से जूझ रहें हैं। प्रत्येक देश की स्थिति, प्राकृतिक संसाधन, उपलब्ध जलवायु एवं अन्य उपलब्ध परिस्थितियों में भिन्नता होती है। उनकी आर्थिक सामाजिक एवं अन्य समस्याएं भी सामान्यतया समान नहीं है। अतः प्रत्येक राष्ट्र को अपनी विशिष्ट परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर ही औद्योगिक विकास के स्वरूप को निश्चित करते समय इसके पर्यावरणीय प्रभावों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में औद्योगीकरण की होड़ मची हुयी हैं, इस आपाधापी में प्रत्येक राष्ट्र औद्योगीकरण से होने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण को नियंत्रित करने के

पर्याप्त उपाय नहीं कर सके हैं। अतः औद्योगीकरण एक ओर देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाते हैं तो दूसरी ओर विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय प्रदूषण फैलाकर वहाँ के नागरिकों को विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित करते है।

आधुनिक औद्योगिक विकास के कारण कोयला, गैस, खनिज तेल आदि के अत्यधिक प्रयोग तथा उष्णकटिवन्धीय वनों के घोर विनाश के फलस्वरूप पिछली एक शताब्दी में वातावरण में व्याप्त कार्बनडाइ ऑक्साइड़ गैस की मात्रा में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा वृद्धि का यह क्रम निरन्तर जारी है। वनों के विनाश एवं भूगर्भीय अवशिष्ट ईधनों के उपयोग के कारण वायुमण्ड़ल के तापक्रम में धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है, विभिन्न ग्लैशियर पिघल रहे है जिससे पर्यावरण प्रभावित हुआ है, परिणामस्वरूप पृथ्वी के वायुमण्ड़ल के ऊपर व्याप्त ओजोन गैस की परतें नष्ट हो रही हैं।

प्रकृति द्वारा मानव को पर्याप्त संसाधनों को भण्डार उपलब्ध है और मनुष्य का यह कर्तव्य है कि उसका विवेकपूर्ण प्रयोग करें। पर्यावरण में ज्ञात और अज्ञात असंख्य संसाधन हैं जिसका मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से उपभोग करता है। प्रकृति के सभी तत्व संसाधन नहीं होते हैं। कोई भी तत्व तभी संसाधन बनता है जब वह मानव की आवश्यकता की पूति करता है। मानव तथा संसाधन में अन्योनयाश्रित सम्बन्ध हैं। मानव की समस्त क्रियाएं अथवा मूर्त संस्कृति का अधार मानव संसाधन हैं।

वास्तव में संसाधन कोई भी वस्तु नहीं है बल्कि व्यापक अर्थों वाला है जिसमें वे सभी कारक एवं योजनाएँ भी सम्मिलित हैं जिनके द्वारा संसाधनों का उत्पादन एवं उपभोग संभव होता है।

संसाधनों का दोहन एवं संरक्षण

आधुनिक प्रगतिशील व वैज्ञानिक मानव ने ऐसी कई अत्याधुनिक विधियां एवं प्रविधियाँ खोज निकाली हैं जिसके उपयोग से वह संसाधनों को दोहन अत्यन्त तीव्र गति से कर सकता है, इसके साथ ही साथ आधुनिक मानव ने अपनी आवश्यकताएँ भी पहले से कई गुना बढ़ाई है। इस उपभोगतावादी संस्कृति के चलते संसाधनों पर और अधिक बोझ पड़ा है, परिणाम संसाधनों को विनाष, जैव विविधता का हास व कई पर्यावरणीय समस्यायें। विगत सदी के जनसंख्या विस्फोट ने संसाधन दोहन की प्रक्रिया में आग में घी का कार्य किया है। उपाय है संसाधन संरक्षण जो कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। संसाधन संरक्षण से तात्पर्य व्यय से अधिक बचत करना या संसाधनों का सावधानीपूर्वक प्रयोग जिसके फलस्वरूप हम संसाधनों के दुरुपयोग को रोक सकें। प्रसिद्ध पर्यावरणविद पार्सन ने स्पष्ट किया है। कि प्राविधिक विकास संसाधनों के दोहन का मुख्य कारण है। प्राविधिक मानव के विवेक से आगे बढ़ जाती है। जिससे संसाधनों का विनाशकारी शोषण बढ़ता जाता है।

संसाधनों के संरक्षण तथा विवेकपूर्ण उपयोग हेतु प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन पेरिस में सन् 1968 ई0 में आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य विश्वव्यापी प्रदूषण को रोकना था। वास्तव में संसाधनो के अत्यधिक प्रयोग से भूतल पर अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा बढ़ती जा रही है। जिसका विनाशकारी प्रभाव तथा वनस्पितियों पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन भी प्रदूषण करती है। मानव की उन क्रियाओं पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। जिसके कारण पर्यावरण को भारी क्षति हो रही है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व की पहचान करनी होगी।

संसाधन संरक्षण की जाटिल सतस्या से सम्पूर्ण विश्व सहित चिंतित है। जब तक प्रत्येक

व्यक्ति इन संसाधनों के प्रति जागरूक नहीं होगा तब तक इनका संरक्षण असंभव है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा संसाधनों का उचित व आवश्यक प्रयोग करना, अवशिष्ट संसाधनों का पुनर्प्रयोग करना, अनावश्यक जन तथा गैस प्रयोग सीमित करना, जन चेतना का संरक्षण व ऊर्जा के परम्परागत संसाधनों के स्थान पर गैर परम्परागत संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहन देना प्रमुख है। प्रथम रूप से वन मृदा व जल संरक्षण के लिए उपाय सुझाये गये हैं। इनमें वनों के संरक्षण के लिए उपयों मं प्रमुख वनों में वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देना जिससे ईंधन के रूप में वन की लकड़ी के स्थान पर गोबर, गैस, मिट्टी को तेल सौर्य चूल्हों, आदि का उपयोग करना, अधिक कृषि योग्य भूमि के लालच में वनों के विनाश को रोकना व वनों के महत्व को बतलाने के लिए जन जागरूकता अभियान छेड़ना, आदि प्रमुख है।

मृदासंसाधन के संरक्षण के लिए और मृदा अपरदन को रोकने के लिए नियत सीमा के कीटनाशक रसायनों का प्रयोग करना, रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैव रसायनों का प्रयोग करना, फसलों द्वारा मृदा की उर्वरकता बढ़ना है। कृषि कार्यों व सिंचाई की व्यवस्था में उन्नति लाना। इसी प्रकार जल संरक्षण के लिए जल के अनावश्यक प्रयोग को रोकना तथा कृषि व उद्योगों में जल का सुरक्षित प्रयोग, वर्षा के शुद्ध जल के संरक्षण के लिए तालाबों, झीलों तथा अन्य उपर्युक्त स्थानों पर इसका संचयन करना तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई, पशु के पीने तथा अन्य कार्यों में इसका प्रयोग किया जाए। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में हमारा भी दायित्व बनता है, जैसे अपने गृह के चर्तुर्दिक पेड़–पौधे लगाये व वातावरण को चतुर्दिक सुन्दर रखे, अनावश्यक रूप से विद्युत का प्रयोग न करें, रिनेवल इनर्जी का प्रयोग जिससे संसाधनों को संरक्षण प्रदान किया जा सके।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि मानव उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी विकसित कर उपयोग करने के क्रम में पर्यावरण संकट में वृद्धि करता जा रहा है। जब प्रकृति रौद्र रूप धारण कर मानव को उसकी करनी का प्रतिफल देने लगी है तब मानव को अपनी भूल का अहसास भी हुआ है तथा वह इसे सुधारने का प्रयास भी कर रहा है। वर्तमान परिदृश्य में यह अति आवश्यक है कि सम्पूर्ण विश्व संगठित होकर परिस्थितिकी को यथावत् बनाये रखते हुये विकासरत् रहने के प्रतिबोध को सभी में जाग्रत करे तथा संपोषणीय विकास की अवधारणा को कार्यरूप में परिणित करे। वस्तुतः आज कुछ इसी प्रकार की मानसिकता एवं दृढ़ता की आवश्यकता है–इसमें कोई दो राय नहीं कि आवश्यक विकास करना उचित है किन्तु इसके साथ ही साथ प्राकृतिक वातावरण को उसी रूप में रहने देना भी उतना ही आवश्यक और उचित है। जो प्रकृति ने हमें उपहार स्वरूप निशुल्क प्रदान किए थे।

संदर्भ सूची

1. सिंह, रवीन्द्र (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. नेगी,पी0 एस0 (2002) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. डब्लू सी0वाल्टन (1970) ग्राउण्ड वाटर रिसोर्स इवेल्यूशन, एम0पी0 ग्रोव हील, न्यूयार्क।
4. सिंह डॉ0 काशीनाथ सिंह, सिंह डॉ0 जगदीश (1997) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व।
5. मिश्र,डा0डी0के (2004) जनसंख्या, पर्यारण एवं विकास,ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
6. मौर्य एस0डी0 (2006) संसाधन एवं पर्यावरण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।